ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 18-19
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

उषा प्रियम्वदा और पचपन खम्भें लाल दीवारें

उषा रानी सी.

असि0 प्रोफे0, हिन्दी विभाग, मिनाक्षी कालेज ऑफ वोमेन, कोडमबक्कम, चेन्नई (तमिलनाडु) भारत

Received- 16 .06. 2019, Revised- 20.06. 2019, Accepted - 23.06.2019 E-mail: rksharpur@gmail.com

सारांश : *उषा प्रियम्वदा की गणना हिंदी के उन कथाकारों में होती है, जिन्होंने आधुनिक जीवन की ऊब छटपटाहट, सत्राहस और अकेलेपन की स्थिति को अनुभूति के स्तर पर पहुचाना और व्यक्त किया है। यही कारण है कि उनकी रचनाओं में एक ओर आधुनिकता का प्रबल स्वर मिलता है, तो दूसरी ओर उसमे विचित्र प्रसंगों तथा संवेदनाओं के साथ हर वर्ग का पाठक तादात में का अनुभव करता है। यहां तक कि पुराने संस्कार वाले पाठकों को भी किसी तरह के अटपटेपन का एहसास नहीं होता।*

कुंजी शब्द – कथाकार, छटपटाहट, सत्राहस, अकेलेपन, अनुभूति, आधुनिकता, प्रबल स्वर, संवेदना, अटपटेपन।

पचपन खम्भें लाल दीवारें उषा प्रियम्वदा का पहला उपन्यास है, जिसमें एक भारतीय नारी की सामाजिक–आर्थिक विशेषताओं से जन्मी मानसिक मंत्रणा का बड़ा ही मार्मिक चित्रण हुआ है। छात्रावास के पचपन खम्भें और लाल दीवारें उन परिस्थितियों के प्रतीक हैं, जिनमें रह कर सुषमा को ऊब तथा घुटन का तीखा एहसास होता है, लेकिन फिर भी वह उससे मुक्त नहीं हो पाती, शायद होना नहीं चाहती। उन परिस्थितियों के बीच जीना ही उसकी नियति है। आधुनिक जीवन की यह एक बड़ी विडंबना है कि जो हम नहीं चाहते वहीं करने की विवशता है। लेखिका ने इस स्थिति को बड़े ही कलात्मक ढंग से प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित किया है।

कथासार – उपन्यास की नायिका सुषमा के इर्द गिर्द ही संपूर्ण कथा घूमती है। सुषमा मध्यमवर्गीय परिवार से संबंधित है। पिता के अपाहिज एवं रिटायर होने के बाद संपूर्ण परिवार का पालन पोषण का भार उसके कंधों पर आता है। बहुत कठिनाइयों के बाद कालेज में नौकरी मिलती है। वह कॉलेज में हिंदी लेक्चरर और हॉस्टल वार्डन के रूप में कार्यरत है। विवाह की उम्र पार करते हुए भी अपनी सभी इच्छाओं को मन में ही दबाते हुए हॉस्टल के चारदीवारी के अंदर ही घुटती और अकेली महसूस करती है।

एक दिन कॉलेज में नील कश्यप से मिलती है, जो उसे क ष्णा मौसी के द्वारा कढ़ा हुआ साड़ी देकर जाता है। तभी सुषमा कृष्णा मौसी के बारे में सोचती है, जो उसके विवाह को लेकर काफी चिन्तित रहती है। कृष्णा मौसी सुषमा से कहती है कि ''पगली अपने बारे में भी सोच ! भाई बहनों की देखरेख में अपने को मत भूल जाना और उम्र भी निकल जाएगा, इस पर सुषमा करती है, मैं कर्तव्य समझकर नहीं कर रही हूं बल्कि इनके प्यार में कर रही हूँ।''

कुछ ही दिनों में नील और सुषमा का सहवास बढ़ जाता है, नील के साथ रहते हुए वह अपना हर दर्द को भूल जाती है। नील उससे पाँच साल छोटा होता है। साथ

2

संबंधों के बारे में कोई उंगली ना उठाएं।

सुषमा नील से प्यार करती है। नील शादी की बात करता है। तब सुषमा एक सही निर्णय नहीं लेती, उसके अंदर अपने परिवार के प्रति समर्पित भाव रखती है, इस कारण से वह नील से संबंध स्थापित करने से रोकती है। इस कारण से वह अपने मन में आक्रोश और पीड़ा का अनुभव करती है।

इस संदर्भ में सुषमा नील से कहती है कि ''तुम्हारी अभी आयु ही क्या है। मैं तुमसे इतनी बड़ी भी तो हूँ, नील हमारा विवाह कभी सफल ना होगा। मुझे सदा यह विचार डसता रहेगा कि कहीं कोई बहुत छोटी, बहुत सुंदर लड़की मुझसे तुम्हें ना छीन लें।''

कुछ दिन पश्चात नील सुषमा से मिलता है और पदोन्नत के कारण हालैंड जाने की बात कहते हुए उसे भी अपने साथ जाने को कहता है । सुषमा अपने परिवारिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए, नील को मना करती है और अकेले ही चले जाने को कहती है।

एयरपोर्ट तक नील को छोड़ने सुषमा जाना चाहती है। मगर वह नहीं जाती है। पचपन खम्भों और लाल दीवारों कि तरह एक गतिहीन जीवन ही उसकी नियति बन जाती है।

उषा जी ने नायिका की विवशता, घुटन, द्वन्द्व आदि परिस्थितियों का उपन्यास में मार्मिक चित्रण किया है। इससे इस बात का बोध होता है कि शायद लेखिका ने मध्यवर्गीय परिवार को नजदीक से देखा, समझा है।

स्पस्ट है कि लेखिका ने अपने उपन्यास में नारी की विभिन्न मानसिक मनोवृत्तियों का सुंदर एवं सूक्ष्म रूप से चित्रण किया है। डॉक्टर देवीशंकर अवस्थी के अनुसार–''उषा

अनुरूपी लेखक

I S S N N O . - 2 3 4 7 - 2 9 4 4
Vol.-10, No.-I, Issues-11 YEAR- June -2019

प्रियम्वदा की .तियों में तकनीक गौड है, लेकिन अनुभूति इतना खरा और पैना उतरता है कि तकनीक की बात उठाना जरूरी नहीं लगता बल्कि यह आशंका होती है कि लेखिका से इससे भिन्न कोई आशा करना शायद उनकी संवेदनाओं को ताजगी और सच्चाई को धुधंला कर देना ही है।'' इससे स्पष्ट साबित होता है कि आधुनिक महिला लेखिकाओं में उषा जी एक सफल लेखिका है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. पचपन खम्भें लाल दीवारें– उषा प्रियम्वदा, पृष्ठ संख्या 10 ।
2. पचपन खम्भें लाल दीवारें– उषा प्रियम्वदा, पृष्ठ संख्या 114 ।
3. हिन्दी लघु उपन्यास, घनश्याम मधुप, पृष्ठ संख्या 177 ।

*****